पाठ -1 बहादुर

लेखक – अमरकांत

यह कहानी एक नेपाली बच्चे की है जो 12–13 साल का है जिसका **गाँव** बिहार और नेपाल की सीमा **पर** है। जिसका पिता **युद्ध** में मारा गया था। उसकी **माँ** थी, जो बहुत गुस्से वाली थी। वह दिनभर इधर-उधर उछल-कूद करता रहता। वह पेड़ों **पर** चढ़कर पक्षियों के घोंसलों में हाथ डालता और बच्चों को निकालता। कभी–कभी जानवरों को चराने के लिए चला जाता। एक दिन उसने एक भैस को बहुत मारा **जिसे** उसकी **माँ** बहुत प्यार करती थी। वह भागी–भागी उसकी **माँ** के पास **पहुँची**। उसको **देखकर माँ** को बहुत गुस्सा **आया** और उसने बहादुर को बहुत मारा **था**। उसे वहीं कराहता हुआ छोड़कर घर आ गई। वह रात भर वहीं जंगल में छिपा रहा। सुबह होते ही जैसे-तैसे घर में घुसा और घी की **हँडिया** से **माँ** के रखे पैसे में से दो **रुपए** निकालकर भाग गया। **गाँव** से 6 मील दूर बस **स्टेशन** था **जो वहाँ** से गोरखपर के लिए **बस** मिलती थी। वह भागकर शहर आ **गया**। **वहाँ स्टेशन** पर उसे वाचक का साला मिला। वाचक को घर में काम करने के लिए नौकर की **आवश्यकता** थी **तो उसने** बहादुर को वाचक के पास ले आया। वाचक ने बहादुर का नाम पूछा और कहा कि वह **इस** घर को अपना घर समझे। इस घर में नौकर–चाकर **को** बहुत इज्जत और प्यार से रखा जाता है। जो सब खाते–पहनते हैं, वही नौकर–चाकर खाते पहनते हैं।

बहादुर मेहनती और **हँसमुख** स्वभाव का था। उसके आने से घर का वातावरण उत्साहपूर्ण हो गया और उसे परिवार के एक सदस्य जैसे रखा जाने लगा। उसकी **फिक्र** सभी को रहती कि उसने खाना खाया कि नहीं**, नाश्ता किया कि नहीं |** उसका पूरा ध्यान रखा जाने लगा। वह भी बहुत मेहनती था। वह सभी के लिए **चाय - नाश्ता** बनाता, घर की साफ–सफाई करता, बर्तन साफ करता, **कपड़े धोता** और रसोई बनवाने की भी जिद् करता**, परन्तु** वाचक की **पत्नी** उस रोटी और सब्जी बनाने से **इनकार** कर देती।

जब वाचक शाम को **दफ्तर** से लौटता तो घर के सभी सदस्य उसके पास आकर दिनभर का अनुभव सुनाते थे। बाद में बहादुर भी पास में आता था। वह वाचक को देखकर अपना सिर झुका लेता और धीरे–धीरे **मुस्कुराने** लगता। वह भी किसी बहुत ही मामूली घटना की रिपोर्ट देता।

वाचक की पत्नी निर्मला भी कभी–कभी उससे पूछती थी कि **माँ** की कभी याद आती ह? तो **जवाब** देता कि, **नहीं**। निर्मला उससे कहती कि **माँ** मारती थी तो पैसे घर भेजने के लिए **क्यों** कहते हो ? वह **कहता माँ**-बाप का कर्ज तो जन्मभर रहता है और **हँसकर** चला जाता है।

निर्मला ने उसे सोने के लिए एक पुरानी फटी दरी उसको दे दी थी और वह अपने साथ एक चादर ले आया था। वह बरामदे में पड़ी हुई टूटी **बाँस** की बनी चारपाई **पर** बिस्तर बिछाकर, नेपाली टोपी को पहनता

व खेलने का सामान पुरानी ताश की गड्डी, गोलियाँ, ब्लेड, कागज की नाव रख लेता और कुछ देर खेलता था। उसके बाद वह धीमे–धीमे स्वर में पहाड़ी गीत गुनगुनाने लगता।

अब उसके दिन अच्छे से गुजरने लगे। वह शान-शौकत से रहने लगा और घर का हर काम करता। वाचक का लड़का किशोर था । वह भी शान–शौकत से और रौब–दाब से रहने वाला था। उसने बहादुर को अपन अनुशासन में रखने के लिए अपने सभी काम बहादुर को सौंप दिए। सवेरे से उसके जूते में पॉलिश होनी चाहिए, कॉलेज जाने से पहले उसकी साइकिल साफ होनी चाहिए, कपड़ों की धुलाई, इस्त्री करना आदि सभी काम बहादुर से करवाने लगा। थोड़ी गलती होती तो वह उसको मारता रहता। वह चुपचाप सुनता रहता। वह धीरे–धीरे उदास रहने लगा। अब उससे रोज कोई न कोई गलती होती और उसे मार या डाँट खानी पड़ती। वाचक को भी लगने लगा कि शायद बहादुर गलतियाँ करने लगा है। वाचक ने उसे समझाया– बहादुर, ये आदत ठीक नहीं। तुम ठीक से काम करोगे तो तुम्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। तुम तो घर के सदस्य की तरह हो और घर के लड़के मार नहीं खाते। वह चुपचाप सुनकर हाथ मुँह धोकर काम करने लगा और प्रसन्न हो गया।

लेकिन कुछ दिनों मे फिर गड़बड़ी हुई। निर्मला को मोहल्ले की औरत ने सिखा दिया कि नौकरों को रोटी बनाकर देने से उनको आदतें खराब हो जाती हैं। निर्मला ने भी उस दिन उसके लिए खाना नहीं बनाया और कहा कि वह अपना खाना खुद बनाए लेकिन बहादुर ने खाना न बनाने की जिद कर ली । निर्मला ने उसे दो चार चाटे भी लगाए लेकिन उसने खाना नहीं बनाया और भूखा ही सो गया। वह सबेरे उठा और अपने लिए रोटी बनाकर रात की रखी सब्जी से खाने लगा और भद्दी रोटियों को देखकर हँसने लगा।

एक दिन रविवार को निर्मला के रिश्तेदार आए। वे अपने किसी खास संबंधी के यहाँ आए थे, तो वाचक के यहाँ भी भेंट मुलाकात करने के लिए चले आए थे। वाचक ने बाजार से रोहू मछली और देहरादूनी चावल ले आया। नाश्ते–पानी के बाद जलेबी बनने लगी। ठीक उसी समय एक घटना घटी । रिश्तेदार की पत्नी कहने लगी कि अभी-अभी मैंने ग्यारह रुपए निकालकर इस चारपाई पर रखे थे पर मिल नहीं रहे और कहने लगी कि मैंने पैसें रिक्शेवाले को देने के लिए निकाले और यहीं रख दिए थे। वह वाचक स कहती है–जरा इससे पूछिए, यह यहाँ पर खड़ा था और तेजी से भाग गया था। वाचक ने बहादुर से पूछा पर बहादुर ने निर्भय होकर उत्तर दिया कि नहीं बाबूजी मैंने नहीं लिया। उसे वाचक ने मारा। उसका मुँह काला पड़ गया क्योंकि उसने लिया ही नहीं था और न ही रिश्तेदार की पत्नी के पैसे गुमे थे पर वह झूठा इल्जाम बहादुर पर लगा रही थी। इस घटना के बाद वह उदास रहने लगा और काम में भी लापरवाही करने लगा। उसे हर कोई कुछ न कुछ कहने लगा।

एक दिन वह आँगन से सिलबट्टा उठाकर बरामदे में रखने ले जा रहा था कि उसके हाथ से सिल गिरकर टूट गया। उस घटना के बाद वह घर छोड़कर भाग गया। बहादुर अपना सामान व तनख्वाह लिए बिना ही भाग गया क्योंकि वह एक स्वाभिमानी लड़का था। उसको किशोर ने ढूँढा पर वह नहीं मिला। इस

घटना से **किशोर**, निर्मला सभी को बहुत अफसोस हुआ और सबसे ज्यादा वाचक को दुख हुआ **क्योंकि** उसको लगा कि **मैं** उसे मारता **नहीं**, तो शायद वह भागता **नहीं**।